International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-06-2019; Accepted: 22-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 60-63

प्रगतिशील काव्य धारा और त्रिलोचन का काव्य विश्लेषण

डॉक्टर श्रीमती अनुपमा शर्मा
शोध केंद्र, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
कविवर त्रिलोचन शास्त्री का सरल जीवन एवं उनकी असाधारण कृतियांए जिंदगी से गुफ्तगू करती कविताएँ, देसी संस्कार के बेबाक कवि त्रिलोचन, प्रकृति के कवि त्रिलोचन, जनता की आस्था के कवि त्रिलोचन, जीवन के यथार्थ को जीते त्रिलोचन का व्यापक काव्यफलक है।
त्रिलोचन शास्त्री संभवतः आधुनिक हिन्दी कविता में अपनी दरिद्रता को हिला देने वाले फिर भी नियंत्रित और कहीं भी गरिमाच्युत नहीं हुए। त्रिलोचन के कृतित्व में जीवन के खुरदरे यथार्थ हैं, पूरी कविता का मिजाज है स्थिरता और स्थिर चित्तता।
अंग्रेजी की प्रसिद्ध सॉनेट कला को सर्वप्रथम हिन्दी में त्रिलोचन जी ने ही प्रयोग किया है। त्रिलोचन न केवल हिन्दी भाषा के ही मर्मज्ञ हैं, वरन अन्य भाषाओं के गुण–धर्मों के भी पारखी हैं। उनकी सॉनेट कला का सृजनात्मक ओज इसका पुष्ट प्रमाण हैं।
त्रिलोचन का रचना–संसार अपनी खास भारतीय मिजाज को हर कीमत पर बनाये रखने के लिए प्रतिबद्ध है। उनकी रचना अपनी ठोस जमीन और ठेठ भाषा से हमेशा जुड़ी हुई है। समकालीन कवियों जैसे नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, पंत, निराला, शमशेर आदि में सबसे अधिक सरलता, सहजता और ईमानदारी उनकी रचना–शीलता के प्राण–तत्व के रूप में पायी जाती है।
प्रगतिशील काव्य धारा भी अंतिम श्रेणी के कवि त्रिलोचन मार्क्सवादी चेतना से पूर्णतः प्रभावित एवं सामाजिक यथार्थ को अधिक महत्व देने वाले हैं। यथार्थता कविताओं के साथ कहानियों में भी झलकती है।
त्रिलोचन की रचना में प्रगतिशीलता का सानिध्य जनमुक्ति के एक जीवन्त प्रेरणास्त्रोत के रूप में हुआ है जो उनकी संवदेना को भारतीय यथार्थ के दृढ़ आधार पर स्थापित करती है।

मूल शब्दः आधुनिक हिन्दी कविताएप्रगतिशील काव्य धाराए मार्क्सवादी चेतनाए सॉनेट कलाए समकालीन कवि

प्रस्तावना

प्रगतिवाद ने अपनी सीमाओं के बावजूद हिन्दी-काव्यधारा के विकास में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अध्याय जोड़ा। उसने काव्य को (साहित्य-मात्र को) व्यक्तिवादी यथार्थ के बन्द कमरे से निकालकर जन-जीवन के बीच प्रवाहित कर दिया, जीवन और साहित्य के मूल्य, सौन्दर्य-बोध और लक्ष्य को समाज के यथार्थ और उसकी रचना से जोड़ा, भाषा को कुहरे से निकालकर धरातल पर प्रतिष्ठित किया।"[1] प्रगतिवादी काव्य जन को, समाज को, धरती को महत्व प्रदान करने वाला काव्य है।

प्रगतिवादी साहित्य की सबसे महान विशेषता काल्पनिकता से यथार्थता की ओर उन्मुख होना है। प्रगतिवादी साहित्य ने लेखकों को कल्पना की वायवी दुनिया से नीचे धरती पर उतारकर यहां की वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति के लिये प्रेरित किया। छायावादी कवि सुमित्रानंदन पन्त ने प्रगतिवादी साहित्य आन्दोलन के प्रभाव से साहित्य जगत में आये परिवर्तन का विषद वर्णन किया है - "अब काव्य की सामग्री स्वप्नों और स्वर्णिम कल्पना से नहीं पर जीवन की कठोर धरती से ही ग्रहण करनी चाहिये और इस प्रकार हमें युग जीवन में जो चुनौती दी है, उसे हमें स्वीकार करना चाहिये। अर्थात् हमें अब अपने कल्पित सुख स्वप्नों से पृथक ऐसे काव्य का सृजन करना चाहिये, जो वर्तमान जीवन की आवश्यकता की पूर्ति करे।"[2]

एक समय ऐसा था जब रूढ़ियों के प्रति किसी भी प्रकार के विद्रोह करने वाले को प्रगतिवादी घोषित कर दिया जाता था। बाद में स्थिति बदल गई। बाद में उन लोगों को मान्यता मिली जो हृदय से साम्यवादी थे। इस के आधार पर दो शब्द चल पड़े, एक प्रगतिवादी दूसरा प्रगतिशील - जिसका मार्क्सवाद में विश्वास हो वह प्रगतिवादी जिसकी मार्क्सवाद के प्रति केवल सहानुभूति हो वह प्रगतिशील।

"प्रगतिवादी कवियों में अनेक नामों की गणना की जाती हैं जिनमें नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री, नागार्जुन, रांगेय राघव और रामदयाल पाण्डेय का उल्लेख शिवदान सिंह चौहान ने प्रगतिवाद प्रेरित नये जीवनादर्श और जन मंगल के उत्साह भरे गीतकारों में किया है और गिरिजा कुमार माथुर, गजानन मुक्तिबोध-नेमीचन्द जैन, भारत भूषण अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, प्रभाकर माचवे, राम विलास शर्मा आदि को व्यक्ति चेतना से आक्रांत प्रयोगवादी कवि की संज्ञा देकर यह स्वीकार किया है कि ये कवि प्रगतिशील धारा से प्रभावित न रह सके ओर इन्होंने नयी पीढ़ी के तरूण प्रगतिशील कवियों को भी स्वरूप और ठोस विचार-वस्तु देने की प्रेरणा दी।"[3]

असली त्रिलोचन को आधा उनकी परिस्थितियों ने गढ़ा है और आधा उनके जीवन पर मुग्ध लोगों ने। त्रिलोचन के व्यक्तित्व से ही ज्ञात होता है कि ये मूलतः जीवन की स्थिर शान्त स्थितियों के कवि है। बहुत तीव्र गति के बीच भी जो धुरी के पास की स्थिरता होती है वे स्वभाव से उसी स्थिरता के कवि है। अनेक विकट स्थितियां है। भावों और विचारों के परस्पर घात प्रतिघात हैं लेकिन सब कुछ बहुत स्थिर चित्त से निपुण संयम से उनकी कविताओं में अंकित है।

त्रिलोचन की भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है। त्रिलोचन बोलचाल की भाषा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को नया आयाम देते हैं। कविता की प्रस्तुति का अंदाज कुछ ऐसा है कि वस्तु और रूप की प्रस्तुति का भेद नहीं रहता। उनका कवि इन दोनों के बीच फॉक की गुँजाइश नहीं छोड़ता। वे अपने ढंग के अकेले कवि थे जिनकी भाषा की बहुअर्थ छवियाँ चकित करती थी। वे अपने आप विश्व शब्द कोष थे।

वे 'सहज सुन्दर' के साधक हैं। शायद इसलिए उनकी कविताएं साँवरी सी लगती हैं। उन्हें आत्मसात करते हुए लगता कि भावों का रंग भी साँवरा

[1] डॉ. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. ६२५
[2] सुमित्रानंदन पंत - रूपाभ - प्रगतिवादी काव्य, कृष्णलाल हंस से उद्दृत, पृ. १०६
[3] शिवदान सिंह चौहान, - काव्यधारा, पृ. ४४

होता होगा। साँवरे और मटमैलेपन से सम्पृक्त त्रिलोचन जी के शब्द भावना के श्याम पट पर आलोकित होकर सनातन वाक्य की अनिर्वचनीय सविधि में ले जाते है।

कविवर त्रिलोचन भाषाओं की परियोजनाओं के कुशल इंजीनियर भी हैं। कभी पत्रिकाओं और कभी भाषा कोशों के सम्पादक कभी अध्यापक और अक्सर यायावर त्रिलोचन जी को धन की परवाह कभी नहीं रही जितनी जन की। जो उनसे खुलकर मिलती हैं, वे उसके वशवर्ती हैं। इसी से खिलता है उनके प्राणों का शतदल।

त्रिलोचन शास्त्री (१९१७), त्रिलोचन शास्त्री ने जीवन के यथार्थ को अपना पथ प्रदर्शक बनाया और उसके अंतर्विरोधों के बीच ही उसकी पूर्णता देखने की कोशिश की। इसलिए उनकी कविताओं की भावभूमि व्यापक और उनकी अनुभूतियों में सच्चाई और गहराई हैं। **इनका पहला काव्य संग्रह** 'धरती' (१९४५) है। इसमें प्रकृति, प्रेम एवं समाजवाद - तीनों को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। प्रकृति का वर्णन मुख्यतः विचारात्मक शैली में हुआ हैं। किन्तु रूप, रंग गंध की अतिश्यता के कारण वह हृदय को आकर्षित अवश्य कर लेता हैं। जैसे -

”सघन पीली उर्मियों में हरियाली सलोनी झूमती सरसों
प्रकम्पित वात से अपरूप सुन्दर धूप सुन्दर ”[४]
”चल रही हवा, धीरे-धीरे सीरी-सीरी उड़ रहे गगन में,
झीने-झीने, कजरारे चंचल बादल”[५]

- धरती

इसी प्रकार व्यक्तियों के छोटे-छोटे चित्र भी कहीं-कहीं सुन्दर रूप में प्रस्तुत किये गये हैं -

”एक मित्र हैं। अभी-अभी बस व्याह हुआ है।
अपनी परिणीता का फोटो दिखा रहे थे,
दिखा रहे थे, बता रहे थे देख गया इतिहास कि
जब से एक सूत्र में हम दोनों हैं।”[६]

उनकी कुछ कविताओं में वैयक्तिक अनुभूतियों की भी व्यंजना प्रभावोत्पादक रूप में हुई हैं।

”आभारी हूँ मैं पथ के आघातों का
मिट्टी जिनसे वज्र हुई उन उत्पातों का”

गुलाब और बुलबुल व दिगन्त दो अन्य काव्य संग्रह है। 'दिगन्त' में सॉनेटो का संग्रह है तो 'गुलाब और बुलबुल' में रूबाइयाँ और गजल हैं। त्रिलोचन की प्रगतिशीलता को स्वरूप रूप में ग्रहण करते हैं। इसलिए उनके प्रेम का दर्द भी क्षय की ओर नही ले जाता।

”दर्द जो आया तो दिल में उसे जगह दे दी।
आके जो बैठ गया, मुझसे उठाया न गया।”[७]

उनकी कविताओं में जीवन की मार्मिक अनुभूति के साथ गजब का आत्म विश्वास भी है–

”लड़ता हुआ समाज नई आशा-अभिलाषा,
नए चित्र के साथ नई देता हूँ भाषा।”[८]

पर त्रिलोचन जहाँ मार्क्सवाद के सिध्दान्तों की चर्चा करते हुए उसका गुणगान करने लगते हैं। वहाँ उनकी कविता गद्य में परिणत हो जाती हैं। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

”बिना पूँजीवाद को मिटाये किसी तरह भी
यह जीवन स्वस्थ नहीं हो सकता ।”[९]

उपर्युक्त काव्य-संग्रह के अतिरिक्त इन्होने कुछ उच्चकोटि के सोनेट भी लिखे हैं। जो 'दिगन्त' (१९५७) में संगृहीत हैं।

”नई चेतनाओं के मुझको बाण अनोखे
सीधे लगे मर्म में आकर चोखे-चोखे।”[१०]

हिन्दी साहित्य में त्रिलोचन प्रगतिशील काव्य धारा के प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। रागात्मक संयम और लयात्मक अनुशासन के कवि होने के साथ-साथ वे बहुभाषाविज्ञ भी है। वे जीवन के एवं जीवन में निहित लय के कवि है।

''मैंने करने जैसा क्या कोई काम किया
शब्द ही तो थे केवल, खेलता रहा जिनसे मैं जी भर,
मुझे अपने मरने का थोड़ा भी दुख नहीं।
मेरे जाने पर शब्दों से मेरा संबंध छूट जायेगा।''

शब्द शिल्पी त्रिलोचन शास्त्री ने २० वर्ष पहले ही ''शब्दों से मेरा संबंध छूट जायेगा।'' कविता में जैसे अपने जाने का संकेत दे दिया हो। अचानक यह बातें सत्य साबित हुई और हिन्दी की प्रगतिशील कविता की अंतिम कड़ी के कवि त्रिलोचन शास्त्री ने ९ दिसम्बर २००७ को दुनिया को अलविदा कह दिया।

त्रिलोचन निखिल भुवन ब्रह्माण्ड के कवि थे। हृदय-हृदय के बीच भावों के पुल बनाते थे। जीवन धर्मिता को चरितार्थ करते हैं। प्रणय का चित्रपट रचने वाले त्रिलोचन को किसी विचारधारा में सीमित करना संभव नहीं है।

वे मार्क्सवादी थे तो वैष्णव भी थे। सूफी थे, मलंग थे। मीलों पैदल चलना, गंगा में रात-बेरात तैरना उनका शौक था। त्रिलोचन सच्चे अर्थों में जीवन विनोद के कवि थे। किसान कवि की आभा उनके हिस्से दर्ज थी। मानवीय ऊष्मा के कवि त्रिलोचन अपनापन, मानवीय, आत्मीयता के कवि थे।

त्रिलोचन जी का काव्य फलक बड़ा था। वे अपने ढंग के अकेले कवि थे जिनकी भाषा की बहु अर्थ छबियाँ चकित करती थीं। वे अपने आप में विश्व शब्द कोष थे। कविवर त्रिलोचन ने कई काव्य-संग्रह जिसमें ''धरती'', ''गुलाब और बुलबुल'', ''ताप के ताए हुए दिन'', ''शब्द'', ''तुम्हें सौंपता हूँ'', ''फूल नाम है एक'', ''सबका सपना आकाश'', ''मेरा घर'' ''जीने की कला'' प्रमुख हैं। इनके लिये कोई भी सम्मान छोटा था। उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी समिति पुरस्कार प्रदान किया गया। जबकि ''ताप के ताए हुए दिन'' काव्य संग्रह के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार १९८१ में प्रदान किया गया। त्रिलोचन के यही गँवई संस्कार उनमें 'धरती' की दाम का मोह उपजाते हैं। हवा और सर्दी के बावजूद स्नान और तैराकी के प्रति उनके आकर्षण को प्रगाढ़ करते हैं। स्वाध्याय और स्वास्थ्य की प्रशंसा उन्हें एक-सा मोहाविष्ट करती है। गुड़ अमरूद, भीगे, चने, भुना हुआ अनाज, गंगा-स्नान और उषा पान से बना यह व्यक्तित्व अपने ताप से ताए हुए इन दिनों से ही अपने कवि-कर्म के लिए जरूरी ऊर्जा ग्रहण करता है। ऐसे कवि के अपने प्रिय कवि तुलसी और निराला ही हो सकते हैं।

''जहाँ, जिस किसी से भी, कुछ पाने की संभावना ज्ञात हो जाय, तो गुड़ में लिपटे चिंउटे की तरह, काशी से पटना तक की ही नहीं, अन्यत्र कहीं की भी, दौड़ लगाने से हमारे त्रिलोचन चूकते नहीं'।''[११]

त्रलोचन में 'अभाव' है लेकिन इस अभाव में न पा सकने की व्यग्रता कहीं दिखलाई नहीं पड़ती। जैसे अतिरिक्त भौतिकता के अनाकर्षण से ही उनके व्यक्तित्व में प्रबलता आती है। कभी-कभी यह खलता है कि इस अभाव के चलते कविता में जो बेचैनी होनी चाहिए वह प्रत्यक्षतः गायब है। उनकी

[४] त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ८४
[५] त्रिलोचन शास्त्री- धरती, पृ. ३०
[६] डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त - हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. १३८
[७] त्रिलोचन शास्त्री - गुलाब और बुलबुल, पृ. ३३
[८] त्रिलोचन शास्त्री - ध्वनि ग्राहक 'दिगन्त' पृ. २२
[९] त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ९८
[१०] त्रिलोचन शास्त्री -'दिगन्त' पृ. २६
[११] लक्ष्मीशंकर श्रेष्ठ - 'त्रिलोचनः दृष्टिदोष के चश्मे से', स्थापना - ६, पृ. ७२

कविता में वह छटपटाहट प्रत्यक्ष क्यों नहीं जिसके भीतर उतरकर पाठक बेचैन कर देने वाली पीड़ा का साक्षात्कार कर उठता है। अर्थात् वह तिलमिलाहट, वह शिद्दत नहीं, बला की वह बेचैनी नहीं जो तूफ़ान के पानी में होती है। चीज़ों और उनके सम्बन्धों में जो कड़ुवाहट भर दे वह तल्खी नहीं। सूक्तियों जैसे लगने वाली काव्य पंक्तियों ने भीतर के उद्वेग और छटपटाहट को काफ़ी दूर तक निरावेग और इस ढंग से भाव-संयमन किया है कि वैयक्तिक आवेश का अभाव बहुत दूर तक खटकता है। उनकी कविताओं का मूल स्वर या चरित्र उग्रता अथवा आवेश का नहीं है; कभी-कभी कहीं इस उग्रता या गुस्से का न होना बोझिल लगता है, सहज नहीं लगता।

त्रिलोचन के यहाँ कविता कुछ-कुछ ऐसी ही है जैसे किताब (शास्त्र-ज्ञान) को जीवन में उतार लिया हो और जीवन कुछ वैसे ही जैसे उसे अनुशासित-व्यवस्थित करके बड़े जतन से स्पष्ट और सहज शब्दों में किताब में सँभालकर रख दिया हो।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में जैसी दुनिया रची है, कविता के क्षेत्र में वही काम त्रिलोचन ने किया है। वे अपने जीवन-दर्शन को निम्न प्रकार से प्रकट करते हैं-

''मुझ में जीवन की लय जागी मैं धरती का हूँ अनुरागी
जड़ी भूत करती थी मुझको वह संपूर्ण निराशा त्यागी''[१२]

प्रेम के बारे में उनका दृष्टिकोण एकदम स्पष्ट हैं, 'प्यार करो तो प्यार करो, क्या आगा-पीछा' या 'चाहे जो समझे यह दुनिया, मैंने तुमको प्यार किया है।' कोई दुविधा नहीं, किसी की परवाह नहीं। इस दृष्टिकोण में रोमांटिक कवियों जैसी मुक्ति-चेतना है; लेकिन प्रेम कल्पना में नहीं, यथार्थ के धरातल पर विकसित होता है। यहाँ प्रेम शौक नहीं है, वह जीवन की अनिवार्यता है :

''आज मैं अकेला हूँ, अकेले रहा नहीं जाता ''[१३]

''त्रिलोचन की कला औरों की कला से भिन्न है। उनकी कला में यथार्थ-परकता, आत्मपरकता तक पहुंच कर भी, वहाँ विलुप्त नहीं हो जाती, और न ही असम्बद्ध और अनजान आत्मपरकता बन जाती है। वैसी आत्मपरक जैसी आत्मपरकता खोखली होती है।

विगलित आत्मपरकता यथार्थ को त्याग देती है-यथार्थ के लोक को नकार देती है- यथार्थ से जुड़ी भाषा को, जड़ समझ कर, दूर फेंक देती है-यथार्थ से जन्म ले रही और बढ़ रही मानवता को देखती तक नहीं और उसे मूल्यहीन समझती है, इसके विपरीत त्रिलोचन वाली आत्मपरकता कहीं भी यथार्थ से नहीं कटी। यथार्थ भी यहाँ आत्मपरक होकर और भी उत्तेजक, उत्प्रेरक, और समर्थशील हुआ है। तभी, यहाँ उनकी कविताओं में व्यक्त आत्मपरकता मानवीय सम्बंधों और सहानुभूति की आत्मपरकता हो गयी है और जन और जीवन के यथार्थ का मानवीय मूल्य हो गयी है। त्रिलोचन की प्रगतिशीलता इसी में सन्निहित है।

यह कहना सही होगा कि लोग उन्हें पढ़ें और तब उनकी कृतियों का मूल्यांकन करें।''[१४]

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि त्रिलोचन की कला सेल्फ-कांशस कला नहीं है। त्रिलोचन का काव्य-स्वर चेतना के अन्तर्विरोधों से कँपकंपाता हुआ निश्चय और अनिश्चय के बीच झूलता डगमग स्वर नहीं है। रचनात्मक तनाव में इस काव्य-स्वर के पीछे कार्यरत साँस बहुत दूर तक खिंची रह सकती है, उसके बीच में ही टूट कर खण्डित हो जाने का अंदेशा नहीं रहता। यह एक साथ कवि की स्नायविक ऊर्जा और उसके काव्य-संयम दोनों को ही उजागर करता है। कवि का अपने ऊपर उद्भुत नियंत्रण है, उसकी रचनात्मक ऊर्जा अभिव्यक्ति के चौखटे को तोड़कर मुक्त नहीं बहने पाती।

त्रिलोचन अनुभूति का पका हुआ रूप रखते हैं, शांत और ओजपूर्ण, जिसकी सह-अनुभूति क्षुब्ध संवेगों के घात-प्रतिघात के स्तर पर नहीं, विवेकयुक्त अन्तर्दृष्टि के स्तर पर की जा सकती है।

हिन्दी में शायद त्रिलोचन ही एकमात्र ऐसे कवि हैं, जिन्होंने अपने को लोक-जीवन से पूरी तरह जोड़ लिया है, सौन्दर्य की एक अन्तःगरिमा के साथ। सृजन के आहादकारी अनुभव के साथ, रचना की एक बराबर की साझेदारी के साथ। त्रिलोचन के लिए रचना किसी तनाव से मुक्त होने में नहीं, बल्कि जीवन का कुछ खोजने, पाने और फिर उसे बाँट देने में होती है। इसीलिए उनकी कविता की रचना-प्रक्रिया का कोई रहस्यमय पक्ष नहीं है। कला त्रिलोचन के लिए एक ऐसा आईना है जिसमें वे अपनी और दूसरों की अनुभूतियों के मर्म को सजीव थिरकते हुए रूपों में दिखा सके और इसमें उनकी कलाकारिता बस इतनी है कि वे उस आईने पर जरा भी धूल-धब्बा न पड़ा रहने दें, उसे झकाझक साफ पारदर्शी रखें।

त्रिलोचन घटनाओं के कवि नहीं है। वे मूल्यों के कवि हैं। उनकी कविता में सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं का चित्रण-वर्णन बहुत कम है, मानव-जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है। वे मानवीय अनुभवों और जीवन-दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुए संघर्ष, आस्था, जिजीविषा, प्रेम, न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन-मूल्यों की व्यंजना करते है। इन जीवन-मूल्यों के बारे में वे कविता में वक्तव्य भी देते हैं या वक्तव्य के पीछे मंतव्य में रहते है। घटनाओं की कविता हमारे सामने की वास्तविकता का बोध कराती है, इसलिए वह जल्दी मन को छूती है। मूल्यों की कविता सतह के नीचे छिपी सच्चाईयों को पहचानने की अन्तर्दृष्टि देती है, इसलिए वह पाठकों से धैर्य की माँग करती है, धीरे-धीरे विवेक को प्रभावित करती है। यही कारण है कि त्रिलोचन की कविता कुछ देर से पाठकों के मन में जगह पा सकी।

त्रिलोचन की कविता हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल रखती है कि आज हम जिन स्थितियों का सामना कर रहे है, उसमें कौन सी कविता सार्थक भूमिका निभा सकती है? आजकल जनता की चेतना पर लगातार संचार-माध्यमों का हमला बढ़ रहा है उसकी अनुभूति, कल्पना और सोच को एक खास ढाँचे में ढ़ालने की कोशिश हो रही है। यहाँ मनुष्य लोहा, कोयला आदि की तरह एक संसाधन मान लिया गया है जिसका शोषण व्यवस्था के अस्तित्व के लिए अनिवार्य हो रहा है। इस व्यवस्था में मनुष्य की मनुष्यता खतरे में है। यहाँ आदमी को रूढ़ियों और बर्बर आदिम प्रथाओं की आग में झोंका जा रहा है। सत्ता क्रमशः अधिक खूँखार और दमनकारी होती जा रही है और जनवादी शक्तियाँ फूट और बिखराव की स्थिति में पड़ी हैं।

ऐसी स्थिति में सबसे पहले उस कविता की जरूरत है जो पाठकों को प्रगतिशील जीवन-मूल्यों के प्रति सचेत बनाये और उनकी रक्षा के लिए संघर्ष में आस्था जगाए।

अन्त में एक सवाल त्रिलोचन की कविता को लेकर किया जा सकता है, क्या उनकी कविता औसत भारतीय आदमी समसामयिक वर्तमान की विसंगतियों के भीतर से उभर रहे नये आदमी में अपने को ढाल सकती है, क्या वह अपनी आस्था और समर्पण के आधारों को तोड़-फोड़ कर उस व्यापक मूल्य अराजकता का अंग बन सकती है, जो आज की निपट नंगी और चीखती हुई सच्चाई है? या फिर उस इतिहास-बोध का जज़ बनकर ही रह जाएगी जो बदलती हुई सामाजिक शक्तियों में तेजी से धुंधला पड़ता जा रहा है? क्या त्रिलोचन की कविता अपना कायाकल्प करने का जोखिम उठाने को तैयार है? त्रिलोचन का काव्य-विवेक अत्यन्त पुष्ट है, क्या वे समय के विवेक को अपनी रचनाशीलता में जगह देंगे?

इन प्रश्नों का उत्तर देती त्रिलोचन की कविता आज विशेष प्रासंगिक हो गई है। वह कविता संचार-माध्यमों के हमलों से जन-चेतना को भ्रमित होने से बचा सकती है। मूल्यों की कविता ही उस चेतना के विकास की भूमिका तैयार करती है। जो रेणु के शब्दों में, समाज को मानवीय और मनुष्य को

[१२] त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ११

[१३] त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ६०-६१

[१४] स्थापना-आठ-१६७० (शिवचन्द्र शर्मा) से साभार

सामाजिक बनाने का संकल्प लेती है। उस चेतना को शोषक व्यवस्था और दमनकारी सत्ता के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा देने वाली कविताओं की भी आज जरूरत है। यह काम वही कविता कर पायेगी, जो वर्तमान व्यवस्था के वास्तविक चरित्र को उधाड़कर जनता के सामने रखती है और आज के जन-संघर्षों से जुड़कर उनके विकास में सहायक बनती है। ''त्रिलोचन का काव्य यदि कोई विश्वास जगाता है तो यह कि स्वयं अपनी देसी परम्परा के अंदर से आत्मसमीक्षा की प्रक्रिया से गुजरकर जो नयी काव्य सर्जन हुई, वही सार्थक है और सच्ची भी। उसका नाम आधुनिकता हो या न हो। कहना न होगा कि समकालीन कवियों में त्रिलोचन परम्परा के इस सहज स्वाभाविक विकास के अग्रदूत हैं और काव्योपलब्धि की दृष्टि से अन्यतम भी।

''नहीं हूँ किसी का भी प्रिय कवि मैं,'' त्रिलोचन ने जब कहा था तब कहा था। यह बात सन् १९६४ की है। आज वे कितनों के ही प्रिय कवि हैं - बल्कि कुछ के तो सबसे प्रिय कवि।[१५]

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त - हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ. १३८
2. त्रिलोचन शास्त्री - गुलाब और बुलबुल, पृ. ३३
3. त्रिलोचन शास्त्री - ध्वनि ग्राहक 'दिगन्त' पृ. २२
4. त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ९८
5. त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ११
6. त्रिलोचन शास्त्री - धरती, पृ. ६०-६१
7. स्थापना-आठ-१९७० (शिवचन्द्र शर्मा) से साभार
8. लक्ष्मीशंकर श्रेष्ठ - 'त्रिलोचनः दृष्टिदोष के चश्मे से', स्थापना - ६, पृ. ७२
9. त्रिलोचन शास्त्री - मेरा घर, पृ. २९
10. शिवदान सिंह चौहान, - काव्यधारा, पृ. ४४
11. डॉ. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. ६२५
12. सुमित्रानंदन पंत - रूपाभ - प्रगतिवादी काव्य, कृष्णलाल हंस से उदृत, पृ. १०९
13. नामवर सिंह - एक नया काव्य शास्त्र त्रिलोचन के लिए/आलोचना अंक - ८२, १९८७

[१५] नामवर सिंह - एक नया काव्य शास्त्र त्रिलोचन के लिए/आलोचना अंक - ८२, १९८७